श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

त्रिंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— अन्तर्हिते भगवति सहसैव व्रजाङ्गनाः ।
अतप्यंस्तमचक्षाणाः करिण्य इव यूथपम् ॥१॥

पदच्छेद— अन्तर्हिते भगवति सहसा एव व्रजाङ्गनाः ।
अतप्यन् तम् अचक्षाणाः करिण्यः इव यूथपम् ॥

शब्दार्थ—

अन्तर्हिते	४.	अन्तर्धान हो जाने पर	अतप्यन्	७.	विरह ज्वालामें वैसे ही जलने लगीं
भगवति	१.	भगवान् के	तम् अचक्षाणाः	६.	उन्हें न देखकर
सहसा	२.	अकस्मात्	करिण्यः	९.	हथिनियाँ
एव	३.	ही	इव	८.	जैसे
व्रजाङ्गनाः ।	५.	व्रज युवतियाँ	यूथपम् ॥	१०.	हाथी के बिना जलती हैं

श्लोकार्थ—भगवान् के अकस्मात् ही अन्तर्धान हो जाने पर व्रज युवतियाँ उन्हें न देखकर विरह ज्वाला में वैसे ही जलने लगीं जैसे हथिनियाँ हाथी के बिना जलती हैं ॥

द्वितीयः श्लोकः

गत्यानुरागस्मितविभ्रमेक्षितैर्मनोरमालापविहारविभ्रमैः ।
आक्षिप्तचित्ताः प्रमदा रमापतेस्तास्ता विचेष्टा जगृहुस्तदात्मिकाः ॥२॥

पदच्छेद— गत्या अनुराग स्मित विभ्रम ईक्षितैः मनोरमआलाप विहार विभ्रमैः ।
आक्षिप्त चित्ताः प्रमदाः रमापतेः ताःताः विचेष्टाः जगृहुः तत् आत्मिकाः ॥

शब्दार्थ—

गत्या अनुराग	२.	चाल, प्रेम भरी	आक्षिप्तचित्ताः	१०.	चित्त चुरा लिया था
स्मितविभ्रम	३.	मुसकान, विलास भरी	प्रमदाः	९.	उन युवतियों का
ईक्षितैः	४.	चितवन	रमापतेः	१.	भगवान् श्रीकृष्ण की
मनोरम	५.	मनोरम	ताः ताः	११.	श्रीकृष्ण की उन-उन
आलाप	६.	प्रेमालाप और	विचेष्टाः	१२.	चेष्टाओं को
विहार	८.	लीलाओं ने	जगृहुः	१४.	करने लगीं ।
विभ्रमैः ।	७.	भिन्न-भिन प्रकार की	तत् आत्मिकाः ॥	१३.	वे कृष्ण स्वरूप होकर

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण की चाल, प्रेम भरी मुसकान, विलास भरी चितवन, मनोरम प्रेमलाप और भिन्न-भिन्न प्रकार की लीलाओं ने उन युवतियों का चित चुरा लिया था । श्रीकृष्ण की उन-उन चेष्टाओं को वे कृष्ण स्वरूप होकर करने लगीं ॥

तृतीयः श्लोकः

गतिस्मितप्रेक्षणभाषणादिषु प्रियाः प्रियस्य प्रतिरूढमूर्तयः ।
असावहं त्वित्यबलास्तदात्मिका न्यवेदिषुः कृष्णविहारविभ्रमाः ॥३॥

पदच्छेद— गति स्मित प्रेक्षण भाषण आदिषु प्रियाः प्रियस्य प्रतिरूढ मूर्तयः ।
असौ अहम् तु इति अबलाः तत् आत्मिकाः न्यवेदिषुः कृष्ण विहार विभ्रमः ॥

शब्दार्थ—गति	२. चाल-ढाल	असौ अहम् तु	१२. मैं श्रीकृष्ण ही हूँ
स्मित	३. हास-विलास	इति	१३. इस प्रकार
प्रेक्षण	४. चितवन	अबलाः	११. गोपियाँ
भाषण आदिषु	५. बोलने आदि में	तत्	१५. कृष्ण
प्रियाः	६. प्यारी गोपियाँ	आत्मिकाः	१६. स्वरूप ही हो गईं
प्रियस्य	१. प्रियतम श्रीकृष्ण की	न्यवेदिषुः	१४. कहती हुईं
प्रतिरूढ	८. बन गयीं	कृष्ण विहार	९. श्रीकृष्ण की लीलाओं का
मूर्तयः ।	७. उन्हीं की मूर्ति	विभ्रमः ॥	१०. अनुकरण करने लगीं

श्लोकार्थ—प्रियतम श्रीकृष्ण की चाल-ढाल-हास-विलास-बोलने आदि में प्यारी गोपियाँ उन्हीं की मूर्ति बन गईं । श्रीकृष्ण की लीलाओं का अनुकरण करने लगीं । गोपियाँ मैं श्रीकृष्ण हूँ इस प्रकार कहती हुईं कृष्ण स्वरूप हो हो गईं ॥

चतुर्थः श्लोकः

गायन्त्य उच्चैरमुमेव संहता विचिक्युरुन्मत्तकवद् वनाद् वनम् ।
पप्रच्छुराकाशवदन्तरं बहिर्भूतेषु सन्तं पुरुषं वनस्पतीन् ॥४॥

पदच्छेद — गायन्त्यः उच्चैः अमुम् एव संहताः विचिक्युः उन्मत्तकवद् वनात् वनम् ।
पप्रच्छुः आकाशवत् अन्तरम् बहिः भूतेषु सन्तम् पुरुषम् वनस्पतीन् ॥

शब्दार्थ—गायन्त्यः	३. गान करने लगीं	पप्रच्छुः	१४. पूछने लगीं
उच्चैः अमुम्	१. वे ऊँचे स्वर से श्रीकृष्ण के गुणों का	आकाशवत्	८. आकाश के समान
एव संहताः	२. ही मिलकर	अन्तरम् बहिः	१०. भीतर-बाहर
विचिक्युः	७. ढूंढने लगीं	भूतेषु	९. समस्त प्राणियों के
उन्मत्तकवद्	४. मतवाली जैसी होकर	सन्तम्	११. रहने पर भी वे
वनात्	५. एक वन से	पुरुषम्	१२. परम पुरुष श्रीकृष्ण के बारे में
वनम् ।	६. दूसरे वन में उन्हें	वनस्पतीन् ॥	१३. पेड़ पौधों से

श्लोकार्थ—वे गोपी ऊँचे स्वर से श्रीकृष्ण के गुणों का ही मिलकर गान करने लगीं । तथा मतवाली जैसी होकर एक वन से दूसरे वन में उन्हें ढूंढने लगीं । आकाश के समान समस्त प्राणियों के भीतर-बाहर रहने पर भी वे परम पुरुष श्रीकृष्ण के बारे में पेड़ पौधों से पूछने लगीं ॥

पञ्चमः श्लोकः

दृष्टो वः कच्चिदश्वत्थ प्लक्ष न्यग्रोध नो मनः ।
नन्दसूनुर्गतः हृत्वा प्रेमहासावलोकनैः ॥५॥

पदच्छेद— दृष्टः वः कच्चित् अश्वत्थ प्लक्ष न्यग्रोध नः मनः ।
नन्द सूनुः गतः हृत्वा प्रेम हास अवलोकनैः ॥

शब्दार्थ—

दृष्टः	१४. देखा है	नन्द	४. नन्द
वः	१२. आपने	सूनुः	५. नन्दन श्याम सुन्दर
कच्चित्	१३. उन्हें कहीं	गतः	११. ले गये हैं
अश्वत्थ	१. हे पीपल !	हृत्वा	१०. चुराकर
प्लक्ष	२. पाकर और	प्रेम	६. अपनी प्रेम भरी
न्यग्रोध	३. बरगद	हास	७. मुसकान और
नः मनः ।	९. हमारा मन	अवलोकनैः ॥	८. चितवन से

श्लोकार्थ—हे पीपल, पाकर, और बरगद ! नन्दनन्दन श्यामसुन्दर अपनी प्रेम भरी मुसकान और मनोहर चितवन से हमारा मन चुराकर ले गये हैं । उन्हें कहीं आपने देखा है ॥

षष्ठः श्लोकः

कच्चित् कुरबकाशोकनागपुन्नागचम्पकाः ।
रामानुजो मानिनीनामितो दर्पहरस्मितः ॥६॥

पदच्छेद— कच्चित् कुरबक अशोक नाग पुन्नाग चम्पकाः ।
राम अनुजः मानिनीनाम् इतः दर्पहर स्मितः ॥

शब्दार्थ—

कच्चित्	११. क्या	राम	६. बलराम जी के
कुरबक	१. कुरबक	अनुजः	७. छोटे भाई
अशोक	२. अशोक	मानिनीनाम्	९. मानिनियों का
नाग	३. नागकेसर	इतः	१२. इधर आये थे
पुन्नाग	४. पुन्नाग और	दर्पहर	१०. मानमर्दन होता है
चम्पकाः ।	५. चम्पा !	स्मितः ॥	८. जिनकी मुसकान मात्र से

श्लोकार्थ—हे कुरबक ! अशोक, नागकेसर, पुन्नाग और चम्पा ! बलराम जी के छोटे भाई, जिनकी मुसकान मात्र से मानिनियों का मानमर्दन होता है, क्या इधर आये थे ॥

सप्तमः श्लोकः

कच्चित्तुलसि कल्याणि गोविन्दचरणप्रिये ।
सह त्वालिकुलैर्बिभ्रद् दृष्टस्तेऽतिप्रियोऽच्युतः ॥७॥

पदच्छेद — कच्चित् तुलसि कल्याणि गोविन्द चरण प्रिये ।
सह त्वाअलिकुलैः बिभ्रद् दृष्टः ते अतिप्रियः अच्युतः ॥

शब्दार्थ—

कच्चित्	९. क्या	सहत्वा	७. साथ तुझे
तुलसि	२. तुलसी	अलिकुलैः	६. वे भौंरों के समूह के
कल्याणि	१. हे कल्याणि !	बिभ्रद्	८. धारण करते हैं
गोविन्द	३. तुम्हारा तो भगवान् के	दृष्टः	१२. दिखाई पड़े हैं
चरण	४. चरणों में	ते अतिप्रियः	१०. तुम्हें अत्यन्त प्रिय
प्रिये ।	५. बड़ा प्रेम है	अच्युतः ॥	११. श्री कृष्ण

श्लोकार्थ—हे कल्याणि तुलसी ! तुम्हारा तो भगवान् के चरणों में बड़ा प्रेम है । वे भौंरों के समूह के साथ तुझे धारण करते हैं । क्या तुम्हें अत्यन्त प्रिय श्रीकृष्ण दिखाई पड़े हैं ॥

अष्टमः श्लोकः

मालत्यदर्शि वः कच्चिन्मल्लिके जाति यूथिके ।
प्रीतिं वो जनयन् यातः करस्पर्शेन माधवः ॥८॥

पदच्छेद— मालति अर्दशि वः कच्चित् मल्लिके जाति यूथके ।
प्रीतिम् वः जनयन् यातः करस्पर्शेन माधवः ॥

शब्दार्थ—

मालति	१. प्यारी मालती !	प्रीतिम्	१०. आनन्द
अर्दशि	७. देखा होगा	वः	९. आपको
वः	४. तुम लोगों ने	जनयन्	११. प्रदान करते हुये वे
कच्चित्	५. कदाचित्	यातः	१२. यहाँ से निकले हैं
मल्लिके	२. मल्लिके	करस्पर्शेन	८. क्या अपने करों के स्पर्श से
जातियूथके ।	३. जाती और जूही	माधवः ॥	६. प्यारे माधव को

श्लोकार्थ-- प्यारी मालती ! मल्लिके, जाती और जूही ! तुम लोगों ने कदाचित् प्यारे माधव को देखा होगा । आपको आनन्द प्रदान करते हुये वे यहाँ से निकले हैं ॥

नवमः श्लोकः

चूतप्रियालपनसासनकोविदारजम्ब्वर्कबिल्वबकुलाम्रकदम्बनीपाः ।
येऽन्ये परार्थभवका यमुनोपकूलाः शंसन्तु कृष्णपदवीं रहितात्मनां नः ॥९॥

पदच्छेद— चूत प्रियाल पनस असन कोविदार जम्बु अर्क विल्व कुल आम्र कदम्ब नीपाः ।
ये अन्ये परार्थ भवका यमुना उपकूलाः शंसन्तु कृष्ण पदवीम् रहित आत्मनाम् नः ॥

शब्दार्थ चूतप्रियाल	१. हे रसाल ! प्रियाल	ये अन्येपरार्थ	८. अन्यान्य परोपकार के लिये ही
पनस असन	२. कटहल पीतशाल	भवकाः	१०. उत्पन्न हुये तरुवरों
कोविदारजम्बु	३. कचनार जामुन	यमुनाउपकूलाः	९. यमुना के तट पर
अर्क विल्व	४. आक बेल	शंसन्तु	१४. हमारा मार्गदर्शन करो
वकुलआम्र	५. मौलसिरी-आम	कृष्णपदवीम्	१२. श्रीकृष्ण की प्राप्ति के
कदम्ब	६. कदम्ब और	रहित	१३. बिना सूना हो रहा है
नीपाः ।	७. नीम तथा	आत्मानम्नः ॥	११. हमारा जीवन

श्लोकार्थ—हे रसाल, प्रियाल, कटहल, पीतशाल, कचनार, जामुन, आक, बेल, मौलसिरी, आम कदम्ब और नीम तथा अन्यान्य परोपकार के लिये यमुना के तट पर उत्पन्न हुये तरुवरों ! हमारा जीवन श्रीकृष्ण की प्राप्ति के बिना सूना हो रहा है । हमारा मार्गदर्शन करो ॥

दशमः श्लोकः

किं ते कृतं क्षिति तपो बत केशवाङ्घ्रिस्पर्शोत्सवोत्पुलकिताङ्गरुहैर्विभासि ।
अप्यङ्घ्रिसम्भव उरुक्रमविक्रमाद् वा आहो वराहवपुषः परिरम्भणेन ॥१०॥

पदच्छेद—किम् ते कृतम् क्षितितपः बत केशव अङ्घ्रि स्पर्शः उत्सवः उत पुलकित अङ्ग रुहैः विभासि ।
अपि अङ्घ्रि सम्भव उरु क्रम विक्रमात् वा आहो वराह वपुषः परिरम्भणेन ॥

शब्दार्थ—किम्ते	३. तुमने कौन सी	पुलकित	१०. रोमाञ्चित होकर
कृतम्	५. की है जो तुम	अङ्गरुहैः	९. तृण-लतारूप से
क्षिति	२. हे पृथ्वी देवी !	विभासि ।	११. सुशोभित हो रही हो
तपः	४. तपस्या	अपिअङ्घ्रि	१४. चरण से स्पर्श किया था
बत	१. अहो	सम्भव	१३. धारण करके जो आपका
केशव अङ्घ्रि	६. श्रीकृष्ण के चरण कमलों के	उरुक्रमविक्रमात्वा	१२. अथवा वामनावतार में विश्वरूप
स्पर्शाः	७. स्पर्श से	आहो वाराह वपुषः	१५. या वाराहरूप धारण करके जो
उत्सव उत	८. प्रसन्न होकर और	परिरम्भणेन ॥	१६. सङ्गप्राप्तकिया या उससे यह दशा है अथवा

श्लोकार्थ—अहो हे पृथ्वी देवी ! तुमने कौन सी तपस्या की है । जो तुम श्रीकृष्ण के चरण कमलों के स्पर्श से प्रसन्न हो कर तृण-लतारूप से रोमञ्चित होकर सुशोभित हो रही हो । वामनावतार में विश्वरूप धारण करके जो आपका चरण से स्पर्श किया था । या वाराह रूप धारण करके जो अङ्ग सङ्ग प्राप्त किया था । उससे यह दशा है ॥

एकादशः श्लोकः

अप्येणपत्न्युपगतः प्रिययेह गात्रैस्तन्वन् दृशां सखि सुनिर्वृतिमच्युतो वः ।
कान्ताङ्गसङ्गकुचकुङ्कुमरञ्जितायाः कुन्दस्रजः कुलपतेरिह वाति गन्धः ॥११॥

पदच्छेद— अप्येणपत्न्यु उपगतः प्रियया इहगात्रैः तन्वन् दृशाम् सखि सुनिर्वृतिम् अच्युताः वः ।
कान्ता अङ्ग-सङ्ग कुचकुङ्कुम रञ्जितायाः कुन्दस्रजः कुलपतेः इह वाति गन्धः ॥

शब्दार्थ—

अप्येणपत्नि	२. अरीहरिण पत्नियों !	वः ।	६. तुम्हारे
उपगतः प्रियया	५. अपनी प्राण प्रिया के साथ	कान्ता	१३. जो उनकी प्रेयसी के
इह गात्रैः	३. यहाँ शरीर को सुख देने वाले	अङ्ग-सङ्ग	१४. अङ्ग-सङ्ग से लगे हुये
तन्वन्	९. दान करने तो नहीं आये	कुचकुङ्कुम	१५. कुचकुङ्कुम से
दृशाम्	७. नयनों को	रञ्जितायाः	१६. अनुरञ्जित रहती है
सखि	१. हे सखी !	कुन्दस्रजः	११. कुन्दकली की माला की
सुनिर्वृतिम्	८. परम आनन्द का	कुलपतेः	१०. कुलपति श्रीकृष्ण की
अच्युतः	४. श्याम सुन्दर	इह वाति गन्धः ॥	१२. मनोहर गन्ध यहाँ आ रही है

श्लोकार्थ— हे सखी ! अरी हरिण पत्नियों ! यहाँ शरीर को सुख देने वाले श्याम सुन्दर अपनी प्राण प्रिया के साथ तुम्हारे नयनों को परम आनन्द का दान करने तो नहीं आये । कुलपति श्रीकृष्ण की कुन्द कली की माला की मनोहर गन्ध यहाँ आ रही है । जो उनकी प्रेयसी के अङ्ग सङ्ग से लगे हुये कुचकुङ्कुम से अनुरञ्जित रहती है ॥

द्वादशः श्लोकः

बाहुं प्रियांस उपधाय गृहीतपद्मो रामानुजस्तुलसिकालिकुलैर्मदान्धैः ।
अन्वीयमान इह वस्तरवः प्रणामं किं वाभिनन्दति चरन् प्रणयावलोकैः ॥१२॥

पदच्छेद— बाहुम् प्रिय अंसे उपधाय गृहीत पद्मः राम अनुजः तुलसिका अलिकुलैः मदान्धैः ।
अन्वीयमानः इह वः तरवः प्रणामम् किम् वा अभिनन्दति चरन् प्रणय अवलोकैः ॥

शब्दार्थ—

बाहुम् प्रिय	६. एक हाथ अपनी प्रेयसी के	अन्वीयमानः	१०. विचरण करते हुये
अंसे उपधाय	७. कन्धे पर रखे और दूसरे में	इह वः	११. यहाँ उन्होंने आपके
गृहीत पद्मः	८. लीला कमल लिये होंगे	तरवः	१. हे तरुवरो !
राम अजः	५. बलराम जी के छोटे भाई श्रीकृष्ण	प्रणामम्	१२. प्रणाम का
तुलसिका	२. उनकी माला की तुलसी पर	किम् वा	९. अथवा क्या
अलिकुलैः	४. भौंरे मंडराते रहते हैं	अभिनन्दति चरन्	१४. अभिनन्दन करते हुये उत्तर दिया है
मदान्धैः ।	३. मदान्ध	प्रणय अवलोकैः ॥	१३. अपनी प्रेम पूर्ण चितवन से

श्लोकार्थ—हे तरुवरो ! उनकी माला की तुलसी में मदान्ध भौंरे मंडराते रहते हैं । बलराम जी के छोटे भाई श्रीकृष्ण एक हाथ अपनी प्रेयसी के कन्धे पर रखे और दूसरे में लीला कमल लिये होंगे । अथवा क्या विचरण करते हुये यहाँ पर उन्होंने आपके प्रणाम का अपनी प्रेम पूर्ण चितवन से अभिनन्दन करते हुये उत्तर दिया है ॥

त्रयोदशः श्लोकः

पृच्छतेमा लता बाहूनप्याश्लिष्टा वनस्पतेः ।
नूनं तत्करजस्पृष्टा बिभ्रत्युत्पुलकान्यहो ॥१३॥

पदच्छेद— पृच्छत इमाः लताः बाहून् अपि आश्लिष्टाः वनस्पतेः ।
नूनम् तत् करज स्पृष्टा बिभ्रति उत् पुलकानि अहो ॥

शब्दार्थ—

पृच्छत	३. पूछो जो	नूनम्	९. निश्चय ही
इमाः	१. इन	तत्	१०. उन्हीं श्याम सुन्दर के
लताः	२. लताओं से	करज	११. नखों के
बाहून्	६. अपनी भुजाओं से	स्पृष्टाः	१२. स्पर्श से ये
अपि	५. भी	बिभ्रति	१४. हो रही हैं
आश्लिष्टाः	७. आलिङ्गन कर रही हैं	उत् पुलकानि	१३. पुलकाय मान
वनस्पतेः ।	४. अपने पति वृक्षों का	अहो ॥	८. अहो

श्लोकार्थ—इन लताओं से पूछो ! जो अपने पति वृक्षों का भी आलिङ्गन कर रही हैं । अहो निश्चय ही उन्हीं श्याम सुन्दर के नखों के स्पर्श से ये पुलकायमान हो रही हैं ॥

चतुर्दशः श्लोकः

इत्युन्मत्तवचो गोप्यः कृष्णान्वेषणकातराः ।
लीला भगवतस्तास्ता ह्यनुचक्रुस्तदात्मिकाः ॥१४॥

पदच्छेद— इति उन्मत्त वचः गोप्यः कृष्ण अन्वेषण कातराः ।
लीलाः भगवतः ताः ताः हि अनुचक्रुः तत् आत्मिकाः ॥

शब्दार्थ—

इति	१. इस प्रकार	लीला	१३. लीलाओं का
उन्मत्त	२. मतवाली	भगवतः	१०. भगवान् की
वचः	४. प्रलाप करती हुई	ताः	११. उन
गोप्यः	३. गोपियाँ	ताः	१२. उन
कृष्ण	५. श्रीकृष्ण को	हि अनुचक्रुः	१४. अनुकरण करने लगीं
अन्वेषण	६. ढूंढते-ढूंढते	तत्	८. भगवत्
कातराः ।	७. कातर हो रही थीं (और)	आत्मिकाः ॥	९. स्वरूप होकर वे

श्लोकार्थ—इस प्रकार मतवाली गोपियाँ प्रलाप करती हुई श्रीकृष्ण को ढूंढते-ढूंढते कातर हो रही थीं । और भगवत् स्वरूप होकर वे भगवान् की उन-उन लीलाओं का अनुकरण करने लगीं ॥

पञ्चदशः श्लोकः

कस्याश्चित् पूतनायन्त्याः कृष्णायन्त्यपिबत् स्तनम् ।
तोकायित्वा रुदत्यन्या पदाहञ्छकटायतीम् ॥१५॥

पदच्छेद— कस्याश्चित् पूतनायन्त्याः कृष्णायन्ती अपिबत् स्तनम् ।
तोकायित्वा रुदती अन्या पदा अहन् शकटा आयतीम् ॥

शब्दार्थ—

कस्याश्चित्	१. कोई एक गोपी	तोकायित्वा	८. बालकृष्ण बनकर
पूतना	२. पूतना	रुदती	९. रोते हुये
यन्त्याः	३. बन गयी	अन्या	७. अन्य किसी ने
कृष्णायन्ती	४. दूसरी कृष्ण बनकर	पदाहन्	१२. पैर से उलट दिया
अपिबत्	६. पीने लगी	शकटा	१०. छकड़ा
स्तनम् ।	५. उसका स्तन	यतीम् ॥	११. बनी हुई गोपी को

श्लोकार्थ—कोई एक गोपी पूतना बन गयी। दूसरी कृष्ण बन कर उसका स्तन पीने लगी। अन्य किसी ने बाल कृष्ण बन कर रोते हुये छकड़ा बनी हुई गोपी को पैर से उलट दिया॥

षोडशः श्लोकः

दैत्यायित्वा जहारान्यामेका कृष्णार्भभावनाम् ।
रिङ्गयामास काप्यङ्घ्री कर्षन्ती घोषनिःस्वनैः ॥१६॥

पदच्छेद— दैत्यायित्वा जहार अन्याम् एका कृष्ण अर्भ भावनाम् ।
रिङ्गयामास कापि अङ्घ्री कर्षन्ती घोष निःस्वनैः ॥

शब्दार्थ—

दैत्या	४. कोई दैत्य का	रिङ्गयामास	९. चलने लगी। तब
यित्वा	५. रूप धर कर	कापि	७. कोई गोपी
जहार अन्याम्	६. उसे हर ले गयी	अङ्घ्री	८. घुटनों के बल
एका	१. कोई एक सखी	कर्षन्ती	१०. घिसटते हुये उसकी
कृष्ण अर्भं	२. बाल कृष्ण	घोष	१२. ध्वनि करने लगे
भावनाम् ।	३. बन कर बैठ गई	निःस्वनैः ॥	११. पायजेब के घुंघरू

श्लोकार्थ- कोई एक सखी बाल कृष्ण बनकर बैठ गयी। कोई दैत्य का रूप धर कर उसे हर ले गयी। कोई गोपी घुटनों के बल चलने लगी। तब घिसटते हुये उसकी पायजेब के घुंघरू ध्वनि करने लगे॥

सप्तदशः श्लोकः

कृष्णरामायिते द्वे तु गोपायन्त्यश्च काश्चन ।
वत्सायतीं हन्ति चान्या तत्रैका तु बकायतीम् ॥१७॥

पदच्छेद— कृष्णरामायिते द्वे तु गोपायन्त्यः च कश्चन ।
वत्सायतीम् हन्ति च अन्या तत्र एका तु बकायतीम् ॥

शब्दार्थ—

कृष्ण	२. श्रीकृष्ण और	वत्सायतीम्	७. कोई बत्सासुर बनो
रामायिते	३. बलराम बन गयीं	हन्ति	१२. मारने को लीला की
द्वे तु	१. दो गोपियाँ	च	८. और
गोपायन्त्यः	६. ग्वाल बाल बन गयीं	अन्या तत्र	११. वहाँ अन्य गोपियों ने उन्हें
च	४. और	एका तु	९. एक गोपी
काश्चन ।	५. बहुत सी गोपियाँ	बकायतीम् ॥	१०. बकासुर बनी

श्लोकार्थ—दो गोपियाँ श्रीकृष्ण और बलराम बन गयीं। और बहुत सी गोपियाँ ग्वाल-बाल बन गयीं। कोई बत्सासुर बनी। और एक गोपी बकासुर बनी। वहाँ अन्य गोपियों ने उन्हे मारने की लीला की ॥

अष्टादशः श्लोकः

आहूय दूरगा यद्वत् कृष्णस्तमनुकुर्वतीम् ।
वेणुं क्वणन्तीं क्रीडन्तीमन्याः शंसन्ति साध्विति ॥१८॥

पदच्छेद— आहूय दूरगा यत् वत् कृष्णः तम् अनुकुर्वतीम् ।
वेणुम् क्वणन्तीम् क्रीडन्तीम् अन्याः शंसन्ति साधु इति ॥

शब्दार्थ—

आहूय	४. बुलाते थे वैसे ही	वेणुम्	७. और बंशी
दूरगाः	३. दूर गये हुये पशुओं को	क्वणन्तीम्	८. बजा-बजा कर
यत् वत्	१. जैसे	क्रीडन्तीम्	९. क्रीडा करने लगीं तब
कृष्णः	२. श्रीकृष्ण	अन्याः	१०. अन्य गोपियाँ
तम्	५. वह उनका	शंसन्ति	१२. प्रशंसा करने लगीं
अनुकुर्वतीम् ।	६. अनुकरण करने लगीं	साधुति ॥	११. वाह-वाह कह कर उसकी

श्लोकार्थ—जैसे श्रीकृष्ण दूर गये हुये पशुओं को बुलाते थे वैसे ही वह उनका अनुकरण करने लगीं। और बंशी बजा-बजा कर क्रीडा करने लगीं। तब अन्य गोपियाँ वाह-वाह कह कर उसकी प्रशंसा करने लगीं।

एकोनविंशः श्लोकः

कस्यांचित् स्वभुजं न्यस्य चलन्त्याहापरा ननु ।
कृष्णोऽहं पश्यत गतिं ललितामिति तन्मनाः ॥१९॥

पदच्छेद— कस्याम् चित् स्वभुजम् न्यस्य चलन्ती आह अपरा ननु ।
कृष्णः अहम् पश्यत गतिम् ललिताम् इति तन्मनाः ॥

शब्दार्थ—

कस्याम् चित्	१. कोई एक गोपी	कृष्णः	९. श्रीकृष्ण हूँ
स्वभुजम्	२. अपनी भुजा को	अहम्	८. मैं
न्यस्य	३. अन्य गोपी के गले में डालकर	पश्यत	१४. देखो
चलन्ती	४. चलती हुई	गतिम्	१३. चाल को तो
आह	६. कहने लगी	ललिताम्	१२. मेरी मनोहर
अपरा	५. अन्य सखी से	इति	१०. इस प्रकार
ननु ।	७. निश्चय ही	तन्मनाः ॥	११. श्रीकृष्णमय होकर बोली

श्लोकार्थ—कोई एक गोपी अपनी भुजा को अन्य गोपी के गले में डाल कर अन्य सखी से कहने लगी निश्चय ही मैं श्रीकृष्ण हूँ । इस प्रकार श्रीकृष्णमय होकर बोली । मेरी मनोहर चाल को तो देखो ॥

विंशः श्लोकः

मा भैष्ट वातवर्षाभ्यां तत्त्राणं विहितं मया ।
इत्युक्त्वैकेन हस्तेन यतन्त्युन्निदधेऽम्बरम् ॥२०॥

पदच्छेद— मा भैष्ट वात वर्षाभ्याम् तत्त्राणम् विहितम् मया ।
इति उक्त्वा एकेन हस्तेन यतन्ती उन्निदधे अम्बरम् ॥

शब्दार्थ—

मा	३. मत	इति	८. ऐसा
भैष्ट	४. डरो	उक्त्वा	९. कह कर
वात	१. कोई कहती आँधी और	एकेन	१०. एक
वर्षाभ्याम्	२. वर्षा से	हस्तेन	११. हाथ से
तत्त्राणम्	६. उससे रक्षा का उपाय	यतन्ती	१२. प्रयत्न करते हुये उसने
विहितम्	७. कर लिया है	उन्निदधे	१४. ऊपर तान ली
मया।	५. मैंने	अम्बरम् ॥	१३. अपनी ओढ़नी

श्लोकार्थ—कोई कहती आँधी और वर्षा से मत डरो । मैंने उससे रक्षा का उपाय कर लिया है । ऐसा कह कर एक हाथ से प्रयत्न करते हुये उसने अपनी ओढ़नी ऊपर तान ली ॥

एकविंशः श्लोकः

आरुह्यैका पदाऽऽक्रम्य शिरस्याहापरां नृप।
दुष्टाहे गच्छ जातोऽहं खलानां ननु दण्डधृक् ॥२१॥

पदच्छेद— आरुह्य एका पदा आक्रम्य शिरसि आह अपराम् नृप।
दुष्ट अहे गच्छ जातः अहम् खलानाम् ननु दण्डधृक् ॥

शब्दार्थ—

आरुह्य	६. चढ़ कर	दुष्ट अहे	६. हे दुष्ट ! नाग
एका	२. एक गोपी	गच्छ	१०. यहाँ से भाग जा
पदा	४. एक पैर	जातः	१४. उत्पन्न हुआ हूँ
आक्रम्य	५. रख कर और	अहम्	११. क्योंकि मैं
शिरसि	३. कालियनाग के सिर पर	खलानाम्	१२. दुष्टों को
आह अपराम्	७. अन्य गोपी से बोली	ननु	८. निश्चय ही
नृप।	१. हे परीक्षित् !	दण्डधृक् ॥	१३. दण्ड देने के लिये ही

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! एक गोपी कालियनाग के सिर पर एक पैर रख कर और चढ़ कर अन्य गोपी से बोली। निश्चय ही हे दुष्ट ! नाग यहाँ से भाग जा। क्योंकि मैं दुष्टों को दण्ड देने के लिये ही उत्पन्न हुआ हूँ॥

द्वाविंशः श्लोकः

तत्रैकोवाच हे गोपा दावाग्निं पश्यतोल्बणम्।
चक्षूंष्याश्वपिदध्वं वो विधास्ये क्षेममञ्जसा ॥२२॥

पदच्छेद— तत्र एका उवाच हे गोपाः दावाग्निम् पश्यत उल्बणम्।
चक्षूंषि आशु अपिदध्वम् वो विधास्ये क्षेमम् अञ्जसा ॥

शब्दार्थ—

तत्र एका	१. तब एक गोपी	चक्षूंषि आशु	७. शीघ्र ही अपने नेत्र
उवाच	२. बोली	अपिदध्वम्	८. बन्द कर लो
हे गोपाः	३. अरे ग्वालों !	वः	१०. तुम लोगों
दावाग्निम्	६. दावानल लगी है	विधास्ये	१२. कर लूंगा
पश्यत	४. देखो	क्षेमम्	११. रक्षा
उल्बणम्।	५. बड़ी भयंकर	अञ्जसा ॥	९. मैं अनायास ही

श्लोकार्थ—तब एक गोपी बोली ! अरे ग्वालों ! देखो बड़ी भयंकर दावानल लगी है। शीघ्र ही अपने नेत्र बन्द कर लो। मैं अनायास ही तुम लोगों की रक्षा कर लूंगा॥

त्रयोविंशः श्लोकः

बद्धान्यया स्रजा काचित्तन्वी तत्र उलूखले ।
भीता सुदृक् पिधायास्यं भेजे भीतिविडम्बनम् ॥२३॥

पदच्छेद— बद्धा अन्यया स्रजा काचित् तन्वी तत्र उलूखले ।
भीता सुदृक् पिधाय अस्यम् भेजे भीति विडम्बनम् ॥

शब्दार्थ—

बद्ध	७. बाँध दिया	भीता	११. भयभीत जैसी
अन्यया	२. अन्य	सुदृक्	८. अब वह सुन्दरी गोपी
स्रजा	५. फूलों की माला से	पिधाये	१०. ढाप कर
काचित्	४. किसी गोपी ने उन्हें	अस्यम्	९. मुँह
तन्वी	३. कृशाङ्गी	भेजे	१४. करने लगी
तत्र	१. वहाँ	भीति	१२. भय की
उलूखले ।	६. ऊखल से	विडम्बनम् ॥	१३. नकल

श्लोकार्थ—वहाँ अन्य कृशाङ्गी किसी गोपी ने उन्हें फूलों की माला से ऊखल में बाँध दिया । तब वह सुन्दरी गोपी हाथों से मुँह ढाँप कर भयभीत जैसी भय की नकल करने लगी ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

एवं कृष्णं पृच्छमाना वृन्दावनलतास्तरून् ।
व्यचक्षत वनोद्देशे पदानि परमात्मनः ॥२४॥

पदच्छेद— एवम् कृष्णम् पृच्छमाना वृन्दावन लताः तरून् ।
व्यचक्षत वन उद्देशे पदानि परमात्मनः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार गोपियाँ	व्यचक्षत	१२. देखे
कृष्णम्	५. श्रीकृष्ण का पता	वन	७. तभी उन्होंने वन में
पृच्छमाना	६. पूछने लगीं	उद्देशे	८. एक स्थान पर
वृन्दावन	२. वृन्दावन के	पदानि	११. चरण चिह्न
लताः	४. लता आदि से	परम	९. परम
तरून् ।	३. वृक्ष और	आत्मनः ॥	१०. आत्मा (परमत्मा श्याम सुन्दर के)

श्लोकार्थ—इस प्रकार गोपियाँ वृन्दावन के वृक्ष और लता-आदि से श्रीकृष्ण का पता पूछने लगीं । तभी उन्होंने वन में एक स्थान पर परमात्मा श्याम सुन्दर के चरण चिह्न देखे ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

पदानि व्यक्तमेतानि नन्दसूनोर्महात्मनः ।
लक्ष्यन्ते हि ध्वजाम्भोजवज्राङ्कुशयवादिभिः ॥२५॥

पदच्छेद— पदानि व्यक्तम् एतानि नन्द सूनोः महात्मनः ।
लक्ष्यन्ते हि ध्वज अम्भोज वज्र अङ्कुश यव आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

पदानि	५. चरण हैं क्योंकि	लक्ष्यन्ते	१०. दिखाई दे रहे हैं
व्यक्तम्	१. अवश्य ही	हि ध्वज	६. इनमें ध्वज
एतानि	२. ये	अम्भोज	७. कमल
नन्दसूनोः	४. नन्द नन्दन के	वज्रअङ्कुश	८. वज्र अङ्कुश
महात्मनः ।	३. उदार शिरोमणि	यव आदिभिः ॥	९. जौ आदि के चिह्न

श्लोकार्थ—अवश्य ही ये उदार शिरोमणि नन्द नन्दन के चरण हैं। क्योंकि इनमें ध्वज, कमल, वज्र, अङ्कुश, जौ आदि के चिह्न दिखाई दे रहे हैं ॥

षड्विंशः श्लोकः

तैस्तैः पदैस्तत्पदवीमन्विच्छन्त्योऽग्रतोऽबलाः ।
वध्वाः पदैः सुपृक्तानि विलोक्यार्ताः समब्रुवन् ॥२६॥

पदच्छेद— तैः तैः पदैः तत् पदवीम् अन्विच्छन्त्यः अग्रतः अबलाः ।
वध्वाः पदैः सुपृक्तानि विलोक्य आर्ताः समब्रुवन् ॥

शब्दार्थ—

तैः तैः	१. उन-उन	वध्वाः	८. किसी गोप बन्धु के
पदैः	२. चरण चिह्नों के द्वारा	पदैः	९. चरण चिह्न
तत् पदवीम्	३. उन श्याम सुन्दर के स्थान को	सुपृक्तानि	७. श्री कृष्ण के साथ
अन्वीच्छन्त्यः	४. खोजती हुईं	विलोक्य	१०. देखकर वे
अग्रतः	६. आगे वढ़ी	आर्ताः	११. दुःखी हो गयीं और
अबलाः ।	५. वे गोपाङ्गनायें	समब्रुवन् ॥	१२. कहने लगीं

श्लोकार्थ—उन चरण चिह्नों के द्वारा उन श्याम सुन्दर के स्थान को खोजती हुई वे गोपाङ्गनाये आगे वढ़ीं। श्रीकृष्ण के साथ किसी गोपबन्धु के चरण चिह्न देखकर कर वे दुःखी हो गयीं, और कहने लगीं ॥

सप्तविंशः श्लोकः

कस्याः पदानि चैतानि यातायाः नन्दसूनुना ।
अंसन्यस्तप्रकोष्ठायाः करेणोः करिणा यथा ॥२७॥

पदच्छेद— कस्याः पदानि च एतानि यातायाः नन्द सूनुना ।
अंसन्यस्त प्रकोष्ठायाः करेणोः करिणा यथा ॥

शब्दार्थ—

कस्याः	६. किस बड़भागिनी	अंसन्यस्त	५. उनके कंधे पर
पदानि	१०. चरण चिह्न हैं	प्रकोष्ठायाः	६. हाथ रख कर
च एतानि	८. ये	करेणोः	२. हथिनी
यातायाः	७. चलने वाली	करिणा	३. गजराज के साथ गई हो वैसे हो
नन्दसूनुना ।	४. नन्द नन्दन के साथ	यथा ॥	१. जैसे

श्लोकार्थ—जैसे हथिनी गजराज के साथ गई हो वैसे ही नन्द नन्दन के साथ उनके कन्धे पर हाथ रख कर चलने वाली ये किस बड़भागिनी के चरण चिह्न हैं ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

अनयाऽऽराधितो नूनं भगवान् हरिरीश्वरः ।
यन्नो विहाय गोविन्दः प्रीतो यामनयद् रहः ॥२८॥

पदच्छेद— अनया आराधितः नूनम् भगवान् हरिः ईश्वरः ।
यत नःविहाय गोविन्दः प्रीतः याम् अनयत् रहः ॥

शब्दार्थ—

अनया	२. इसने	यत्	७. जो कि
आराधितः	६. उपासना की है	नःविहाय	६. हमें छोड़कर
नूनम्	१. अवश्य ही	गोविन्दः	८. श्याम सुन्दर
भगवान्	४. भगवान्	प्रीतःयाम्	१०. प्रसन्न होकर इसे
हरिः	५. श्रीकृष्ण की	अनयत्	१२. ले गये हैं
ईश्वरः ।	३. सर्वशक्तिमान्	रहः ॥	११. एकान्त में

श्लोकार्थ—अवश्य ही इसने सर्वशक्तिमान् भगवान् श्रीकृष्ण की उपासना की है । जो कि श्याम सुन्दर हमें छोड़कर प्रसन्न होकर इसे एकान्त में ले गये हैं ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

धन्या अहो अमी आल्यो गोविन्दाङ्घ्र्यब्जरेणवः ।
यान् ब्रह्मेशो रमा देवी दधुर्मूर्ध्न्यघनुत्तये ॥२९॥

पदच्छेद— धन्याः अहो अमी आल्यः गोविन्द अङ्घ्रि अब्जरेणवः ।
यान् ब्रह्म ईशः रमादेवी दधुः मूर्ध्नि अघनुत्तये ॥

शब्दार्थ—

धन्याः	७. धन्य हैं	यान्	८. जिस रज को
अहो	१. अहो !	ब्रह्मा	९. ब्रह्मा
अमी	६. ये जन	ईशः	१०. शंकर
आल्यः	२. प्यारी सखियों	रमादेवी	११. लक्ष्मी आदि
गोविन्द	३. श्रीकृष्ण के	दधुः	१४. धारण करते हैं
अङ्घ्रि अब्ज	४. चरण-कमलों की	मूर्ध्नि	१३. अपने सिर पर
रेणवः।	५. धूली का स्पर्श करने वाले	अघनुत्तये ॥	१२. अशुभ नष्ट करने के लिये

श्लोकार्थ—अहो ! प्यारी सखियों ! श्रीकृष्ण के चरण कमलों की धूली का स्पर्श करने वाले ये जन धन्य हैं । जिस रज को ब्रह्मा, शंकर, लक्ष्मी आदि अशुभ नष्ट करने के लिये अपने सिर पर धारण करते हैं ॥

त्रिंशः श्लोकः

तस्या अमूनि नः क्षोभं कुर्वन्त्युच्चैः पदानि यत् ।
यैकापहृत्य गोपीनां रहो भुङ्क्तेऽच्युताधरम् ॥३०॥

पदच्छेद— तस्याः अमूनि नः क्षोभम् कुर्वन्ति उच्चैः पदानि यत् ।
या एका अपहृत्य गोपीनाम् रहः भुङ्क्ते अच्युत अधरम् ॥

शब्दार्थ—

तस्याः	८. उसके	या एका	२. जो एक गोपी
अमूनि	९. ये	अपहृत्य	३. श्रीकृष्ण को ले जाकर
नः	१२. ये हमारे हृदय में	गोपीनाम्	१. हम गोपियों में
क्षोभम्	१३. क्षोभ	रहः	४. एकान्त में
कुर्वन्ति	१४. उत्पन्न कर रहें हैं	भुङ्क्ते	७. पान कर रही है
उच्चैः पदानि	११. चरण चिह्न हैं	अच्युत	५. श्रीकृष्ण के
यत् ।	१०. जो उभरे हुये	अधरम् ॥	६. अधर रस का

श्लोकार्थ—हम गोपियों में जो एक गोपी श्रीकृष्ण को ले जाकर एकान्त में श्रीकृष्ण के अधर रस का पान कर रही है । उसके ये जो उभरे हुये चरण चिह्न हैं । ये हमारे हृदय में क्षोभ उत्पन्न कर रहे हैं ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

न लक्ष्यन्ते पदान्यत्र तस्या नूनं तृणाङ्कुरैः ।
खिद्यत्सुजाताङ्घ्रितलामुन्निन्ये प्रेयसीं प्रियः ॥३१॥

पदच्छेद— न लक्ष्यन्ते पदानि अत्र तस्याः नूनम् तृण अङ्कुरैः ।
खिद्यत् सुजात अङ्घ्रितलाम् उन्निन्ये प्रेयसीम् प्रियः ॥

शब्दार्थ—

न लक्ष्यन्ते	३. नहीं दिखलाई देते	खिद्यत्	११. न लग जाय इसलिये उसे
पदानि	२. पैर	सुजात	७. सुकुमार
अत्र तस्याः	१. यहाँ उस गोपी के	अङ्घ्रितलाम्	८. चरणों के नीचे
नूनम्	४. निश्चय ही	उन्निन्ये	१२. कन्धे पर चढ़ा लिया होगा
तृण	९. घास और	प्रेयसीम्	६. कहीं मेरी प्रिया के
अङ्कुरैः ।	१०. अङ्कुर	प्रियः ॥	५. श्याम सुन्दर ने

श्लोकार्थ—यहाँ पर उस गोपी के पैर नहीं दिखलाई देते । निश्चय ही श्याम सुन्दर ने कहीं मेरी प्रिया के सुकुमार चरणों के नीचे घास और अङ्कुर न लग जाय, इस लिये उसे कन्धे पर चढ़ा लिया होगा ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

इमान्यधिकमग्नानि पदानि वहतो वधूम् ।
गोप्यः पश्यत कृष्णस्य भाराक्रान्तस्य कामिनः ॥३२॥

पदच्छेद— इमानि अधिक मग्नानि पदानि वहतः वधूम् ।
गोप्यः पश्यत कृष्णस्य भार आक्रान्तस्य कामिनः ॥

शब्दार्थ—

इमानि	१०. यहाँ	गोप्यः	१. हे गोपियों
अधिक	११. अधिक	पश्यत	२. देखो
मग्नानि	१२. गहरे धंस गये हैं	कृष्णस्य	८. श्रीकृष्ण के
पदानि	९. चरण	भार	५. भार के
वहतः	४. ढोने के	आक्रान्तस्य	६. कारण उस
वधूम् ।	३. उस गोपी को	कामिनः ॥	७. कामी

श्लोकार्थ—हे गोपियों ! देखो । उस गोपी को ढोने के भार के कारण उस कामी श्रीकृष्ण के चरण यहाँ अधिक गहरे धंस गये हैं ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

अत्र प्रसूनावचयः प्रियार्थे प्रेयसा कृतः ।
प्रपदाक्रमणे एते पश्यतासकले पदे ॥३३॥

पदच्छेद— अत्र प्रसून अवचयः प्रिया अर्थे प्रेयसा कृतः ।
प्रपदाक्रमणे एते पश्यत असकले पदे ॥

शब्दार्थ—

अत्र	१.	यहाँ	प्रिया अर्थे	८.	अपनी प्रिया के लिये
अवरोपिता	५.	नीचे उतारा है । और	प्रेयसा	७.	प्रियतम श्रीकृष्ण ने
कान्ता	४.	अपनी प्रेयसी को	कृतः	११.	किया है
पुष्प हेतोः	३.	फूल चुनने के लिये	प्रपदाक्रमणे	१२.	उचकने के कारण
महात्मना ।	२.	उदार शिरोमणि श्रीकृष्ण ने	एते	१३.	इन
अत्र	६.	यहाँ	पश्यत	१६.	देखो !
प्रसून	६.	पुष्पों का	असकले	१४.	आधे-आधे
अवचयः	१०.	चयन	पदे ॥	१५.	चरण चिह्नों को

श्लोकार्थ—यहाँ उदार शिरोमणि श्रीकृष्ण ने फूल चुनने के लिये अपनी प्रेयसी को नीचे उतारा है । और यहाँ प्रियतम श्रीकृष्ण ने अपनी प्रिया के लिये पुष्पों का चयन किया है । उचकने के कारण इन आधे-आधे चरण-चिह्नों को देखो ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

केशप्रसाधनं त्वत्र कामिन्याः कामिना कृतम् ।
तानि चूडयता कान्तामुपविष्टमिह ध्रुवम् ॥३४॥

पदच्छेद — केश प्रसाधनम् तु अत्र कामिन्याः कामिना कृतम् ।
तानि चूडयता कान्ताम् उपविष्टम् इह ध्रुवम् ॥

शब्दार्थ—

केश	४.	केशों का	तानि	७.	फूलों को
प्रसाधनम्	५.	शृंगार	चूडयता	६.	चोटी में गूंथने के लिये
तु अत्र	१.	यहाँ पर	कान्ताम्	८.	अपनी प्रिया को
कामिन्याः	३.	अपनी प्रेयसी के	उपविष्टम्	१२.	बैठे रहे होंगे
कामिना	२.	कामी पुरुष के समान	इह	१०.	यहाँ पर
कृतम् ।	६.	किया है । और	ध्रुवम् ॥	११.	बहुत देर तक

श्लोकार्थ—यहाँ पर कामी पुरुष के समान अपनी प्रेयसी के केशों का शृंगार किया है । और फूलों को अपनी प्रिया की चोटी में गूंथने के लिये यहाँ पर बहुत देर तक बैठे रहे होंगे ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

रेमे तया चात्मरत आत्मारामोऽप्यखण्डितः ।
कामिनां दर्शयन् दैन्यं स्त्रीणां चैव दुरात्मताम् ॥३५॥

पदच्छेद— रेमे तया च आत्मरतः आत्मारामः अपि अखण्डितः ।
कामिनाम् दर्शयम् दैन्यम् स्त्रीणाम् च एव दुरात्मताम् ॥

शब्दार्थ—

रेमे	१२.	क्रीडा की थी	कामिनाम्	५.	कामियों का
तया	११.	उन्होंने गोपी के साथ	दर्शयन्	१०.	दिखाने के लिये
च आत्मरतः	१.	और श्रीकृष्ण अपने आप में सन्तुष्ट	दैन्यम्	६.	दैन्य
आत्मारामः	२.	आत्माराम	स्त्रीणाम्	८.	स्त्रियों की
अपि	४.	भी	च एव	७.	और
अखण्डितः ।	३.	पूर्ण होने पर	दुरात्मताम् ॥	९.	कुटिलता

श्लोकार्थ—और श्रीकृष्ण अपने आप में सन्तुष्ट आत्माराम पूर्ण होने पर भी कामियों का दैन्य और स्त्रियों की कुटिलता दिखाने के लिये ही उन्होंने गोपी के साथ क्रीडा की थी ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

इत्येवं दर्शयन्त्यस्ताश्चेरुर्गोप्यो विचेतसः ।
यां गोपीमनयत् कृष्णो विहायान्याः स्त्रियो वने ॥३६॥

पदच्छेद— इति एवम् दर्शयन्त्यः ताः चेरुः गोप्यः विचेतसः ।
याम् गोपीम् अनयत् कृष्णः विहाय अन्याः स्त्रियः वने ॥

शब्दार्थ—

इति	७.	तब	याम् गोपीम्	१३.	जिस गोपी को
एवम्	३.	इस प्रकार	अनयत्,	१४.	अपने साथ ले गये थे
दर्शयन्त्यः	४.	चरण चिह्न दिखाती हुई	कृष्णः	८.	श्रीकृष्ण
ताः	१.	वे गोपियाँ	विहाय	१२.	छोड़कर
चेरुः	६.	हो गई ।	अन्याः	९.	अन्य
गोप्यः	२.	अन्य गोपियों को	स्त्रियः	१०.	स्त्रियों को
विचेतसः	५.	मूर्च्छित	वने ॥	११.	वन में

श्लोकार्थ—वे गोपियाँ अन्य गोपियों को इस प्रकार चरण चिह्न दिखाती हुई मूर्च्छित हो गईं । तब श्री कृष्ण अन्य स्त्रियों को वन में छोड़ कर जिस गोपी को अपने साथ ले गये थे ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

सा च मेने तदाऽऽत्मानं वरिष्ठं सर्वयोषिताम् ।
हित्वा गोपीः कामयाना मामसौ भजते प्रियः ॥३७॥

पदच्छेद — सा च मेने तदा आत्मानम् वरिष्ठम् सर्व योषिताम् ।
हित्वा गोपीः कामयानाः माम् असौ भजते प्रियः ॥

शब्दार्थ—

सा	३.	उसने	हित्वा	१४.	छोड़कर मुझे अपने साथ लिया है
च	१.	और	गोपीः	१३.	अन्य गोपियों को
मेने	७.	मानते हुये (विचार किया कि)	कामयानाः	१२.	प्रेम करने वाली
तदा	२.	तब	माम्	१०.	मुझे
आत्मानम्	४.	अपने को	असौ	८.	ये
वरिष्ठम्	६.	सर्वश्रेष्ठ	भजते	११.	सबसे अधिक प्रेम करते हैं तभी तो
सर्वयोषिताम् ।	५.	सभी स्त्रियों में	प्रियः ॥	९.	प्रियतम श्याम सुन्दर

श्लोकार्थ—और तब उसने अपने को सभी स्त्रियों में सर्वश्रेष्ठ मानते हुये विचार किया कि ये प्रियतम श्याम सुन्दर मुझे सबसे अधिक प्रेम करते हैं। तभी तो प्रेम करने वाली अन्य गोपियों को छोड़कर मुझे अपने साथ लिया है ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

ततो गत्वा वनोद्देशं दृप्ता केशवमब्रवीत् ।
न पारयेऽहं चलितुं नय मां यत्र ते मनः ॥३८॥

पदच्छेद— ततः गत्वा वनोद्देशम् दृप्ता केशवम् अब्रवीत् ।
न पारये अहम् चलितुम् नय माम् यत्र ते मनः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तब वह	न पारये	८.	बिलकुल समर्थ नहीं हूँ
गत्वा	४.	जाकर	अहम् चलितुम्	७.	मैं चलने में
वनोद्देशम्	३.	वन प्रान्त में	नय	१२.	वहीं ले चलिये
दृप्ता	२.	मतवाली	माम्	११.	मुझे
केशवम्	५.	श्रीकृष्ण से	यत्र	१०.	जहाँ हो
अब्रवीत् ।	६.	बोली (हे श्रीकृष्ण)	ते मनः ॥	९.	आपका मन

श्लोकार्थ—तब वह वन प्रान्त में जाकर ब्रह्मा और शंकर के भी शासक श्रीकृष्ण से बोली। मैं चलने में बिलकुल समर्थ नहीं हूँ। आपका मन जहाँ हो मुझे वहीं ले चलिये।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

एवमुक्तः प्रियामाह स्कन्ध आरुह्यतामिति ।
ततश्चान्तर्दधे कृष्णः सा वधूरन्वतप्यत ॥३९॥

पदच्छेद— एवम् उक्तः प्रियाम् आह स्कन्धे आरुह्यताम् इति ।
ततः च अन्तर्दधे कृष्णः सा वधूः अन्वतप्यत ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. उसके ऐसा	ततः	११. तब
उक्तः	२. कहने पर श्याम सुन्दर ने	च	७. और
प्रियाम्	३. अपनी प्रेयसी से	अन्तर्दधे	१०. अन्तर्धान हो गये
आह	४. कहा कि तुम	कृष्णः	९. श्रीकृष्ण वहीं पर
स्कन्धे	५. मेरे कन्धे पर	सा	१२. वह
आरुह्यताम्	६. चढ़ जाओ	वधूः	१३. गोपी
इति ।	८. ऐसा कहने के बाद	अन्वतप्यत ॥	१४. रोने तथा पछताने लगी

श्लोकार्थ—उसके ऐसा कहने पर श्याम सुन्दर ने अपनी प्रेयसी से कहा कि तुम मेरे कन्धे पर चढ़ जाओ । और ऐसा कहने के बाद श्रीकृष्ण वहीं पर अन्तर्धान हो गये । तब गह गोपी रोने तथा पछताने लगी ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

हा नाथ रमण प्रेष्ठ क्वासि क्वासि महाभुज ।
दास्यास्ते कृपणाया मे सखे दर्शय सन्निधिम् ॥४०॥

पदच्छेद— हा नाथ रमण प्रेष्ठ क्वासि क्वासि महाभुज ।
दास्याः ते कृपणायाः मे सखे दर्शय सन्निधिम् ॥

शब्दार्थ—

हा नाथ	१ हा नाथ !	दास्याः	९. दासी हूँ
रमण	२. हा रमण !	ते कृपणायाः	८. मैं आपकी दीन हीन
प्रेष्ठ	३. हा प्रेष्ट !	मे सखे	७. मेरे सखा !
क्वासि	५. तुम कहाँ हो ?	दर्शय	१०. मुझे दर्शन देकर अपना
क्वासि	६. कहाँ हो ?	सन्निधिम् ॥	११. सान्निध्य प्राप्त कराओ
महाभुज ।	४. हा महाभुज ।		

श्लोकार्थ—हा नाथ ! हा रमण ! हा प्रेष्ठ ! हा महाभुज ! तुम कहाँ हो ? कहाँ हो ? मेरे सखा ! मैं आपकी दीन-हीन दासी हूँ । मुझे दर्शन देकर अपना सान्निध्य प्राप्त कराओ ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

अन्विच्छन्त्यो भगवतो मार्गं गोप्योऽविदूरतः ।
ददृशुः प्रियविश्लेषमोहितां दुःखितां सखीम् ॥४१॥

पदच्छेद— अन्विच्छन्त्यः भगवतः मार्गम् गोप्यः अविदूरतः ।
ददृशुः प्रिय विश्लेष मोहिताम् दुःखिताम् सखीम् ॥

शब्दार्थ—

अन्विच्छन्त्यः	३. खोजती हुई	ददृशुः	११. देखा
भगवतः	२. भगवान् को	प्रिय	६. प्रियतम श्रीकृष्ण के
मार्गम्	१. मार्ग में	विश्लेष	७. वियोग के कारण
गोप्यः	४. गोपियों ने	मोहिताम्	९. अचेत
अविदूरतः ।	५. कुछ दूर से ही	दुःखिताम्	८. दुःखी और
		सखीम् ॥	१०. अपनी सखी को

श्लोकार्थ—मार्ग में भगवान् को खोजती हुई गोपियों ने कुछ दूर से ही प्रियतम श्रीकृष्ण के वियोग के कारण दुःखी और अचेत अपनी सखी को देखा ॥

द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

तया कथितमाकर्ण्य मानप्राप्तिं च माधवात् ।
अवमानं च दौरात्म्याद् विस्मयं परमं ययुः ॥४२॥

पदच्छेद— तया कथितम् आकर्ण्य मान प्राप्तिम् च माधवात् ।
अवमानम् च दौरात्म्यात् विस्मयम् परमम् ययुः ॥

शब्दार्थ—

तया	२. उसके द्वारा	अवमानम्	९. जो अपमान किया उसे सुन कर
कथितम्	५. बात को	च	७. और
आकर्ण्य	६. सुन कर	दौरात्म्यात्	८. उसने कुटिलता वश भगवान् का
मानप्राप्तिम्	४. सम्मान प्राप्त होने की	विस्मयम्	११. आश्चर्य में
च	१. और	परमम्	१०. वे अत्यधिक
माधवात् ।	३. श्रीकृष्ण से	ययुः ॥	१२. पड़ गयीं

श्लोकार्थ—और उसके द्वारा श्रीकृष्ण से सम्मान प्राप्त होने की बात को सुन कर और उसने कुटिलता वश भगवान् का जो अपमान किया उसे सुन कर वे अत्यधिक आश्चर्य में पड़ गयीं ॥

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

तताऽविश वनं चन्द्रज्योत्स्ना यावद् विभाव्यते ।
तमः प्रविष्टमालक्ष्य ततो निववृतुः स्त्रियः ॥४३॥

पदच्छेद— ततः अविशन् वनम् चन्द्रज्योत्स्ना यावत् विभाव्यते ।
तमः प्रविष्टम् आलक्ष्य ततः निववृतुः स्त्रियः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	श्रीकृष्णमय मन	तमः	६.	उन्हीं के
अविशन्	६.	घुसती चली गईं	प्रविष्टम्	८.	प्रवेश
वनम्	५.	उस वन में	आलक्ष्य	१०.	देख कर
चन्द्रज्योत्स्ना	३.	चन्द्रमा का प्रकाश	ततः	११.	वहाँ से
यावत	२.	जहाँ तक	निववृतुः	१२.	वापिस लौट आयीं
विभाव्यते ।	४.	समझ आया वे	स्त्रियः ॥	७.	फिर ये स्त्रियाँ

श्लोकार्थ—इसके बाद जहाँ तक चन्द्रमा का प्रकाश समझ आया वे उस वन में घुसती चलीं गईं । फिर वे स्त्रियाँ अन्धकार का प्रवेश देखकर वहाँ से वापिस लौट आयीं ॥

चतुःचत्वारिंशः श्लोकः

तन्मनस्कास्तदालापास्तद्विचेष्टास्तदात्मिकाः ।
तद्गुणानेव गायन्त्यो नात्मागाराणि सस्मरुः ॥४४॥

पदच्छेद— तत् मनस्काः तत् आलापाः तत् विचेष्टाः तत् आत्मिकाः ।
तत् गुणान् एव गायन्त्यः न अत्मा अगाराणि सस्मरुः ॥

शब्दार्थ—

तत् मनस्काः	१.	श्रीकृष्णमय मन	तत्	६.	उन्हीं के
तत्	२.	कृष्णमय	गुणान्	७.	गुणों का
आलापः	३.	वाणी और	एव	८.	ही
तत्	४.	कृष्ण की	गायन्त्यः	९.	गान करती हुईं वे
विचेष्टाः	५.	लीलाओं तथा	न	१४.	नहीं किया
तत्	१०.	कृष्ण	आत्मागराणि	१२.	फिर उन्होंने अपने घरों का
आत्मिकाः ।	११.	स्वरूप ही हो गयीं	सस्मरुः ॥	१३.	स्मरण

श्लोकार्थ—श्रीकृष्णमय मन ,कृष्णमय वाणी और कृष्ण की लीलाओं का तथा उन्हीं के गुणों का ही गान करती हुई वे कृष्ण स्वरूप हो गईं फिर उन्होंने अपने घरों का भी स्मरण नहीं किया ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

पुनः पुलिनमागत्य कालिन्द्याः कृष्णभावनाः ।
समवेता जगुः कृष्णं तदागमनकाङ्क्षिताः ॥४५॥

पदच्छेद— पुनः पुलिनम् आगत्य कालिन्द्याः कृष्ण भावनाः ।
समवेताः जगुः कृष्णम् तत् आगमन काङ्क्षिताः ॥

शब्दार्थ—

पुनः	३. वे पुनः	समवेताः	१०.	वे सब इकट्ठी होकर
पुलिनम्	५. किनारे पर	जगुः	१२.	गान करने लगीं
आगत्य	६. आ गयीं	कृष्णम्	११.	श्याम सुन्दर के गुणों का
कालिन्द्याः	४. यमुना नदी के	तत्	७.	और कृष्ण के
कृष्ण	१. श्री कृष्ण की ही	आगमन	८.	आगमन की
भावनाः ।	२. भावना करती हुई	काङ्क्षिताः ॥	९.	आकांक्षा के कारण

श्लोकार्थ— श्री कृष्ण की ही भावना करती हुई वे पुनः यमुना नदी के किनारे पर आ गयीं । और श्रीकृष्ण के आगमन की आकांक्षा के कारण वे सब इकट्ठी होकर श्याम सुन्दर के गुणों का गान करने लगी ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
रासक्रीडायां कृष्णान्वेषणम् नाम त्रिंशः अध्यायः ॥३०॥